"स्त्री विमर्श के परिपार्श्व में मृणाल पाण्डे का रचना संसार : एक अध्ययन"

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय की पी.-एच.डी.(हिंदी) की उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध की रूपरेखा:

अनुसंधित्सु

दिलीप कुमार

शोध निर्देशक

डॉ. अनीता शुक्ल

असिस्टेंट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा गुजरात

हिंदी विभाग, कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा गुजरात

"स्त्री-विमर्श के परिपार्श्व में मृणाल पाण्डे का रचना संसार : एक अध्ययन"

शोध प्रेरणा एवं विषय चयन-

स्त्री-विमर्श एक उत्तर आधुनिक विमर्श है। इसकी लोकप्रियता एवं उत्थान के अनेक कारण हैं। अनेक विमर्शों के क्रम में नारी-विमर्श पढ़ने वालों की जिस तरह से तादाद बढ़ी है तथा इस पर लिखने वाले लेखक/लेखिकाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। इससे यह प्रतीत होता है कि यह विमर्श संसार की सभी औरतों के अधिकार एवं अस्तित्व का परिचायक है। इसके अंतर्गत स्त्रियों की संवेदना एवं आक्रोश का भाव नारी-विमर्श के केंद्र में है। नारी-विमर्श की कई लेखिकाओं के पढ़ने के बाद मेरी इस विषय में रुचि जगी। यही कारण है कि मैंने इसे अपने शोध प्रबंध का विषय बनाया।

मृणाल पांडे का रचना संसार स्त्री-विमर्श से जुड़ा हुआ है। इनका साहित्य स्त्रियों की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक विषयों की समीक्षा करता है। मृणाल जी का साहित्य स्त्री-विमर्श से संबंधित तो है ही साथ ही साथ स्त्रियों की संचेतनाएँ, समस्याएं तथा दैनिक परिस्थितियों का चिंतन प्रस्तुत करता है। किसी युग की स्थितियां उस युग के साथ जुड़ी होती हैं। एक साहित्यकार का व्यक्तित्व निर्माण, उसके अनुभव, तथा सामाजिक भागीदारी उस युग की ही देन है। मृणाल पांडे का जीवन, घर-परिवार, समाज से प्रभावित तो है ही इसके अलावा स्त्रियों के साथ बिताए

गए कुछ पल एवं उनके दमन, शोषण के बारे में जानकारी प्राप्त करने पर उन पर साहित्य रचने की प्रेरणा प्रदान करता है। स्त्रियों को दिशा निर्देश करने वाला यह साहित्य मानव मूल्यों की व्याख्या करता है। स्त्री-विमर्श के केंद्र में स्त्री है लेकिन मानव एवं साहित्य का संबंध भी इसके साथ जुड़ा हुआ है। स्त्रियों की जिस अनुभूति को लेखिका ने अपनी रचना में दर्शाया है, इससे यह मालूम होता है कि स्त्रियों की स्थिति प्राचीन काल से विषम रही है। काल एवं परिस्थिति के साथ स्त्रियों की स्थिति में भी परिवर्तन हुआ है। आज की 21वीं सदी आते आते स्त्री सबल एवं उत्तम होने के लिए निरंतर संघर्षशील है। पुरुषों को तो समस्त अधिकार मिल गए लेकिन स्त्रियां अब भी कुछ अधिकारों से वंचित हैं। यह वंचना ही स्त्री विमर्श को जन्म देता है।

मैंने नारी-विमर्श पर आधारित कई पुस्तकों का अध्ययन किया है इसलिए जब मुझे शोध कार्य करने का अवसर मिला तो मैंने इसी को अपना माध्यम बनाया। स्त्रियों का चित्रण मृणाल पांडे के नाटक, उपन्यास, कहानी तथा निबंध में बखूबी हुआ है। लेखिका ने विशेष रूप से अपने निबन्धों में स्त्रियों की दिशा एवं दशा का अवलोकन किया है। यह विवरण हमारी संस्कृति तथा सामाजिक संदर्भों से जुड़ा है। मृणाल जी का साहित्य उन्नीसवीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ है जो अब भी गतिमान है। स्त्री विमर्श के चित्रण में उन्होंने हर युग के पहलू पर दृष्टि डाली है जिसमें उन्होंने दलित,बेरोजगार कामकाजी,ग्रामीण,शहरी तथा मध्यवर्गीय स्त्रियों के आंकड़ों को तैयार करते हुए स्त्री मुक्ति, स्त्री की छटपटाहट, स्त्री की सामाजिक-आर्थिक चेतना को

साहित्य का विषय बनाया। 'स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक' नामक पुस्तक में स्त्रियों के अधिकार एवं अस्तित्व की वकालत की गई है। 'जहां औरतें गढ़ी जाती हैं' पुस्तक में स्त्री के उद्‌गार तथा सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक क्षेत्र में स्त्रियों की भागीदारी को दर्शाया गया है। 'ध्वनियों के आलोक में स्त्री' पुस्तक में संगीत साधिका तथा गवनहारियों के जीवन मूल्यों की वफादारी को साहित्य में रचकर स्त्री विमर्शकारों को मृणाल पांडे ने चुनौती दी है।

स्त्री मूल्यों की टकराहट एवं उनके जीवन का संगीत 'परिधि पर स्त्री' नामक पुस्तक में दिखाई देता है। इन सभी विचारधाराओं एवं उनके जीवन मूल्यों का संघर्ष मृणाल जी की कृतियों में दिखाई देता है। मृणाल जी के स्त्रियों के विषय में रिपोर्टपरक सर्वेक्षण ने मुझे शोध की तरफ आकर्षित किया। जब मैंने स्त्री विमर्श और मृणाल पांडे के रचना संसार पर शोध कार्य करने की चर्चा अपनी शोध निर्देशिका आदरणीय डॉक्टर अनीता शुक्ल जी से की तो उन्होंने मेरे इस शोध कार्य में अपना योगदान देने की सहर्ष स्वीकृति दे दी और मैंने अपने शोध प्रबंध का विषय "स्त्री-विमर्श के परिपार्श्व में मृणाल पांडे का रचना संसार : एक अध्ययन" चुना। मेरा मुख्य विषय स्त्री-विमर्श की चेतना एवं संवेदना से जुड़ा हुआ है जिस पर मैंने अधिक बल दिया है। मैंने अपने माता-पिता एवं गुरुजनों के आशीर्वाद से यह शोध कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

शोध **प्रबंध की** रूपरेखा-

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने प्रस्तुत शोध प्रबंध को छः अध्यायों में विभक्त किया है और प्रत्येक अध्याय के अंत में संदर्भ सूची भी दी गयी है।

प्रथम अध्याय-

(१) स्त्री-विमर्श का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र तथा महत्त्व

(२) स्त्री-विमर्श का इतिहास तथा विकास

(३) स्त्री-विमर्श, स्त्री चेतना, स्त्री संवेदना, पदों की व्याख्या

(४) सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा भौगोलिक संदर्भ में स्त्री-विमर्श का स्वरूप।

द्वितीय अध्याय : मृणाल पाण्डे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व-

(१) जन्म एवं बाल्यकाल

(२) पारिवारिक जीवन

(३) कार्य क्षेत्र

(४) रचनाओं का परिचय

(५) पुरस्कार तथा सम्मान

(६) भारत में स्त्री लेखन के क्षेत्र में मृणाल पांडे का स्थान

तृतीय अध्याय: मृणाल पांडे के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श-

(१) 'विरुद्ध' उपन्यास में स्त्री-विमर्श

(२) 'पटरंगपुरपुराण' उपन्यास में स्त्री-विमर्श

(३) 'देवी' उपन्यास में स्त्री-विमर्श

(४) 'रास्तों पर भटकते हुए' उपन्यास में स्त्री-विमर्श

(५) 'हमको दियो परदेस' उपन्यास में स्त्री-विमर्श

(६) 'अपनी गवाही' उपन्यास में स्त्री-विमर्श

(७) 'सहेला रे' उपन्यास में स्त्री विमर्श

चतुर्थ अध्याय : मृणाल पांडे के कहानी संग्रह में स्त्री-विमर्श-

(१) 'बचुली चौकीदारिन की कढ़ी' कहानी संग्रह में स्त्री-विमर्श

(२) 'चार दिन की जवानी तेरी' कहानी संग्रह में स्त्री-विमर्श

(३) 'यानी कि एक बात थी' कहानी संग्रह में स्त्री-विमर्श

पंचम अध्याय : मृणाल पांडे के नाटकों में स्त्री-विमर्श-

(१) 'जो राम रचि राखा' नाटक में स्त्री विमर्श

(२) 'आदमी जो मछुआरा नहीं था' नाटक में स्त्री विमर्श

(३) 'काजर की कोठरी' नाटक में स्त्री विमर्श

(४) 'चोर निकलकर भागा' नाटक में स्त्री विमर्श

(५) 'शर्मा जी की मुक्ति कथा' नाटक में स्त्री विमर्श

(६) 'सुपरमैन की वापसी' नाटक में स्त्री विमर्श

(७) 'धीरे-धीरे रे मना' नाटक में स्त्री विमर्श

षष्ठ अध्याय : मृणाल पाण्डे के निबंधों एवं अन्य विधाओं में स्त्री-विमर्श-

(१) 'परिधि पर स्त्री' में स्त्री विमर्श

(२) 'स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक' में स्त्री विमर्श

(३) 'जहां औरतें गढ़ी जाती हैं' में स्त्री विमर्श

(३) 'ओ उब्बीरी' में स्त्री विमर्श

(४) 'स्त्री लंबा सफर' में स्त्री विमर्श

(५) 'ध्वनियों के आलोक' में स्त्री विमर्श

उपसंहार-

(१) संदर्भ ग्रंथ सूची

(२) आधार ग्रंथ

(३) सहायक ग्रंथ

शोध प्रबंध में विषय वस्तु का विवरण-

प्रथम अध्याय : स्त्री विमर्श का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र तथा महत्त्व-

प्रथम अध्याय में मैंने स्त्री-विमर्श का अर्थ समझाकर उससे संबंधित अनेक पदों को समझाकर स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उसके बाद 'स्त्री' शब्द के अर्थ को विद्वानों ने जो व्यापक स्तर पर बताया है उसका विवरण दिया है। 'स्त्री' शब्द का विभिन्न काल में भिन्न-भिन्न अर्थ रहा है तथा हर काल में स्त्रियों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है इसलिए स्त्री-विमर्श के अंतर्गत स्त्रियों के हर पहलू की पड़ताल की है। अनेक विद्वानों द्वारा स्त्री विमर्श की परिभाषा देकर उनके महत्त्व को बताया है। इसी अध्याय में स्त्री विमर्श के क्षेत्रों की चर्चा हुई है। इसके अंदर स्त्रियों का पारिवारिक जीवन, सामाजिक क्षेत्र में स्त्रियों की भूमिका, राजनीतिक क्षेत्र में स्त्रियों का योगदान, आर्थिक क्षेत्र में स्त्रियों की भूमिका, व्यापार एवं उद्योग धंधों के क्षेत्र

में स्त्रियों की भूमिका, शिक्षा के क्षेत्र में स्त्रियों का योगदान, भारत में स्त्री साक्षरता प्रतिशत, कला, संगीत एवं फिल्म के क्षेत्र में स्त्रियों का महत्त्व, साहित्य, मीडिया में स्त्री, खेल के क्षेत्र में स्त्रियों का महत्व आदि की विस्तृत चर्चा की गई है।

स्त्री की पुकार एवं अकुलाहट स्त्री-विमर्श के केंद्र में है। नारी के ऊपर पुरुष ने सदैव से अपना अधिकार समझा है यही कारण है कि वह सदैव स्त्री का शारीरिक, मानसिक, आर्थिक शोषण करता रहा है। नारीवाद की इस विचारधारा का समावेश इस अध्याय में शामिल है। इसके अतिरिक्त इस अध्याय में स्त्री विमर्श के उद्‌भव एवं विकास पर प्रकाश डाला गया है। पितृसत्ता क्या है? इसके कारण स्त्री अपने को अस्तित्वहीन या शक्तिहीन समझती रही है इस बिंदु का उल्लेख किया गया है। स्त्रियों की उत्पादक क्षमता एवं परिश्रम, स्त्री पर शारीरिक अधिकार, औरत की आजादी पर नियंत्रण, संपत्ति तथा आर्थिक संसाधन का उल्लेख करते हुए परिवार, धर्म, कानून के महत्त्व को बताया गया है। इतना ही नहीं स्त्री चेतना, स्त्री संवेदना, पदों की व्याख्या को स्पष्ट करते हुए मृणाल पांडे के साहित्य के संदर्भ में मूल्यांकन किया गया है।

भारत में स्त्रियों की स्थिति तथा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा भौगोलिक संदर्भ में स्त्री-विमर्श के स्वरूप पर चिंतन प्रस्तुत करते हुए विभिन्न विद्‌वानों के मत का विश्लेषण किया गया है। इस प्रकार इस अध्याय में स्त्री विमर्श पर सारगर्भित चिंतन शोध के माध्यम से किया गया है।

द्वितीय **अध्याय : मृणाल पांडे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व-**

नई महिला लेखिकाओं में मृणाल पांडे प्रमुख हैं। इन्होंने रचनाधर्मिता को पत्रकारिता से जोड़ा है। इनके द्वारा रचित उपन्यास, कहानी, नाटक तथा निबंध स्त्रियों का समाज में एक प्रमुख स्थान निर्धारित करते हैं। इनकी रिपोर्टिंग और साक्षात्कार से साहित्य को या नारी विमर्श को एक नई दिशा मिली है। पत्रकारिता जगत के अनुभव को साहित्य के साथ रखकर रचना या साहित्य को और सरल बना दिया है। सरल, सहज एवं विनम्र भाव वाली लेखिका मृणाल पांडे ने स्त्री विमर्श के कई रचनाकारों से अलग हटकर अपने साहित्य की रचना की है। स्त्रियों के जीवन में आने वाली दुरूहता, समस्याओं तथा शोषण को बताते हुए उनके जीवन के कटु अनुभवों को भी अपने निबन्धों के माध्यम से साझा किया है। पुरानी परंपराओं एवं रूढ़ियों को दरकिनार कर स्वयं के अनुभवों तथा स्त्रियों के दैनिक जीवन की विसंगतियों को दर्शाने का प्रयास स्त्री विमर्श के अंतर्गत किया गया है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत मैंने दो विषयों की चर्चा की है। पहले विषय के अंतर्गत मृणाल पांडे के व्यक्तित्व का विवरण है जिसमें जन्म एवं बाल्यकाल, पारिवारिक जीवन, कार्य क्षेत्र का विवरण है। दूसरे भाग में रचनाओं का परिचय, पुरस्कार तथा सम्मान, भारत में स्त्री लेखन के क्षेत्र में मृणाल पांडे का स्थान आदि का परिचय है। इनके साहित्य में भी इनके जीवन के बारे में कुछ न कुछ जरूर पता

चल जाता है। इनके बाल जीवन की घटनाएं तथा अपने दादी, नानी, बुआ के साथ हुई बातचीत की कुछ झांकियां भी इन्होंने अपने उपन्यासों, कहानियों में दिखाया है। रीति-रिवाज, धर्म, परंपरा ऊँच-नीच, जाति-पाँति के ताने-बाने से उलझी कुछ कथाओं को साहित्य का रूप देकर सामाजिक संदर्भ के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। स्त्रियों की आपबीती को मृणाल जी ने बड़े सहज एवं तार्किक ढंग से प्रस्तुत कर उनके कार्यों की स्थिति को रचनाओं में प्रस्तुत कर नारी विमर्श को एक नया आयाम दिया है। मृणाल पांडे को अब तक लगभग दस से ज्यादा पुरस्कार मिल चुके हैं। यह पुरस्कार उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का मूल्यांकन करते हैं।

भारत में जो नारी लेखन की परंपरा रही है। उससे अलग हटकर इसमें काम करने वालों में मृणाल पांडे का नाम सर्वोपरि है। इनके लेखन में शोध एवं प्रमाण की सर्वोच्चता है। जिसे न तो कल्पनापूर्ण कहा जा सकता है और न ही अवसरवादी कहकर नकारा जा सकता है। पढ़ने पर पाठक स्वयं खोज करने लगता है यही कारण है कि इनकी रचनाएं साहित्य पढ़ने वालों के लिए रुचिकर तो है ही साथ ही साथ लेखकों/ समीक्षकों/शोधार्थियों के लिए स्त्री विमर्श समझने के लिए एक आधार भी है।

तृतीय अध्याय : मृणाल पाण्डे के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श-

तृतीय अध्याय में मृणाल पांडे के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श की चर्चा की गई है। उपन्यास हिंदी साहित्य में रुचिकर एवं बहुचर्चित विधा है। गद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं में उपन्यास की जितनी ख्याति पाठकों के बीच प्रसिद्ध है उतनी किसी साहित्य की नहीं। इस प्रसिद्धि के कई मायने हैं। उपन्यास की कई पद्धतियां प्रचलित हैं जैसे- सामाजिक उपन्यास, राजनीतिक उपन्यास, धार्मिक उपन्यास, ऐयारी उपन्यास, मनोवैज्ञानिक उपन्यास, रिपोर्ताज शैली के उपन्यास आदि। मृणाल जी के उपन्यास सामाजिक संदर्भ ग्रहण करते हुए स्त्री विमर्श पर आधारित हैं। मृणाल जी के उपन्यासों में समाज, राजनीति, धर्म की सुगबुगाहट तो मिलती ही है, साथ ही साथ पत्रकारिता, कला, संगीत के क्षेत्र में स्त्रियों की स्थिति तथा पितृसत्तात्मक व्यवस्था की कैद में छटपटाती स्त्री का दयनीय रूप भी देखने को मिल जाता है। धर्म परंपरा तथा पारिवारिक स्वाभिमान की जिम्मेवारी स्त्री के ही मत्थे पर मढ़ दी गई। इतने पर यदि कहीं स्त्री ने नकार दिया तो फिर उस पर कीचड़ भी उछाले गये।

'विरुद्ध' उपन्यास में स्त्री जीवन की विसंगतियों को दिखाया गया है। स्त्री जीवनभर सबकुछ अपना बलिदान करने के बावजूद भी सबके विरुद्ध होती है। उसके संघर्ष की कहानी खत्म नही होती। 'पटरंगपुर पुराण' उपन्यास में अंग्रेजी भाषा के प्रति लोगों की बढ़ती रुचि को उजागर किया गया है। लोग दो शब्द अंग्रेजी बोल कर

अपने आप को गौरवान्वित महसूस करते हैं। जो लोग अंग्रेजी के सही शब्दों का इस्तेमाल ही नहीं कर पाते वे भी अंग्रेजी की फैशन भरी दुनिया में रम गए हैं। जरूरत पड़ने पर काम हिंदी में ही करेंगे पर दिखावटीपन के कारण आज अंग्रेजों की पुरानी पीढ़ी के वाहक बन रहे हैं। यही हालत पटरंगपुरियों का था। बुद्धिवल्लभ भी विलायत की महारानी के नाम पर अपने घर का नाम विक्टोरिया कॉटेज रख देते हैं। पटरंगपुर शहर के लोग अंग्रेजी की अंधी भावुकता में इतना बह गए थे कि अंग्रेजों जैसे शान-शौकत का पालन करने लगे थे। लेखिका ने इतना तक बताया कि अंग्रेजी के नाम यदि पटरंगपुर के लड़के-लड़कियों को सिर में कील भी ठुकवा लेने को कहें तो भी ठुकवा लेंगे। लड़की के जन्म के समय ही उसका जीवन निश्चित हो जाता है। उसके खान-पान, पालन-पोषण पर हर पल नजर रखी जाती है। घर-परिवार की इज्जत, मर्यादा लड़के पर नहीं बल्कि लड़की पर निश्चित होती है।

'देवी' उपन्यास में भी बेटे और बेटी के फर्क को बताया गया है। देवी के रूप में चित्रित स्त्रियों के जीवन को सहज एवं गरिमामय बताया गया है। बेटे को पादरियों के स्कूल में पढ़ाया जाता है। लड़कों को घर आने पर अच्छे व्यंजन खिलाए जाते हैं तथा बैठने के लिए आसन दिए जाते हैं जबकि लड़कियां कहीं भी बैठ जाएं और कुछ भी खाएं कोई ध्यान नहीं दिया जाता। आत्मकथा को मानो लेखिका ने बताते हुए स्त्रियों के निजी जीवन की समस्याओं को उपन्यास के केंद्र में रखा है। 'रास्तो पर भटकते हुए' उपन्यास में स्त्री की भटकाव भरी जिंदगी का अनोखा चित्रण

है। दर-दर ठोकरे खाने वाली स्त्री अपने जीवन मे एक नया परिवर्तन चाहती है। स्त्री की क्षमता एवं सहनशीलता के द्वंद्व को इस उपन्यास में दिखाया गया है।

लड़का कहीं भी रहे, कुछ भी करें सब ठीक है लेकिन यदि लड़की थोड़ी भी गलती करे तो लोग कहने लगतें हैं कि घर की इज्जत चली गई, नाक कट गई। 'हमको दियो परदेस' उपन्यास में लेखिका ने बेटा और बेटी में सामाजिक अंतर को उपन्यास का विषय बनाया है। आज भी घर-परिवार में बेटी की अपेक्षा बेटे का अधिक महत्व है। बेटे को वंश का वारिस तथा बेटी को पराया समझा जाता है। टीनू बचपन से ही लड़की होने के एहसास से परिचित हो जाती है। टीनू यह देखती है कि समाज के हर कार्य में लड़की पर नजर रखी जाती है। उसे अधिक खाने, हंसने, घूमने पर पाबंदी रखी जाती है। उस पर अनेक प्रतिबंध लगाकर लड़की होने का एहसास कराया जाता है।

'अपनी गवाही' उपन्यास में पत्रकारिता जीवन की विसंगतियों को लेखिका ने दिखाया है। अंग्रेजी एवं हिंदी पत्रकारिता में भेद को भी स्पष्ट किया है। पत्रकारिता की दुनिया में स्त्रियों का बहुत शोषण है। कम पैसे में उनको कार्य करना पड़ता है। एक स्त्री के पत्रकारिता के क्षेत्र में काम करने के लिए किन-किन शोषण को सहन करना पड़ता है? 'सहेला रे' उपन्यास में स्त्रियों के संगीत के क्षेत्र में योगदान को स्पष्ट किया गया है। इन संगीतज्ञ स्त्रियों का योगदान संगीत के अलावा साहित्य में महत्वपूर्ण रहा है।

इस प्रकार इनके उपन्यासों में पर्वतीय जीवन की समस्या, आंचलिकता, दहेज की समस्या, हिंसा, तलाक की समस्या, प्रेम की समस्या, पत्रकारिता जीवन की विडंबना को दर्शाया गया है।

चतुर्थ अध्याय : मृणाल पांडे के कहानी संग्रह में स्त्री-विमर्श -:

चतुर्थ अध्याय मृणाल पांडे के कहानी संग्रह पर आधारित है। इनकी कहानियां मानवीय जीवन की विसंगतियों को उजागर करती हैं। स्त्रियों के शोषण, दमन, तथा कुंठाग्रस्त जीवन का विवरण प्रस्तुत करती हैं। मैंने इनके तीन कहानी संग्रह की चर्चा कर अलग-अलग कहानियों की मूल संवेदना तथा भावों को लेखिका के लेखन के तर्ज पर पहचानने का प्रयास किया है। इनकी कहानियां कल्पना के सांचे में नहीं गढ़ी गई है बल्कि उनमें यथार्थ की गवाही को साहित्य में प्रस्तुत कर समाज का एक विषय माना गया है। वर्षो से जिस अबला एवं दयनीय नारी को पितृसत्ता ने 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' कहा उसी के आधार पर लेखिका ने स्त्री मुक्ति की आकांक्षा एवं स्त्री की छटपटाहट को कहानियों का केंद्र बिंदु बनाया। कामकाजी स्त्री, चक्की पीसती स्त्री, झाड़ू लगाने वाली स्त्री तथा खेत में काम करने वाली स्त्री की जिस मानसिक स्थिति का जायजा लेखिका ने प्रस्तुत किया है वह आज के संदर्भ में स्त्री के दमन एवं सताई गई स्त्रियों की कहानी है। नारी का बदलता रूप आत्मविश्वास

एवं विद्रोह को कहानियों में सीधे-सीधे व्यक्त कर स्त्रियों की आत्म कहानी को अपने साथ जोड़ते हुए कहानियों में व्यक्त किया है।

'बचुली चौकीदारिन की कढ़ी' नामक कहानी संग्रह में कई कहानियां हैं। यह कहानियां स्त्री के चरित्र एवं जीवन का सारगर्भित मूल्यांकन करती हैं। स्त्री की मानवीयता तथा कटु जीवन के ऊहा-पोह में भटकती नारी का जीवन यथार्थ चित्रित है। वर्षों से जो स्त्री केवल भोग्या समझी जाती रही है तथा समाज में उपेक्षित होकर दर-दर भटक रही थी ऐसी कहानियों का संग्रह यह कहानी संग्रह है। 'चार दिन की जवानी तेरी' नामक कहानी संग्रह समाज में स्त्री के प्रेम, शोषण, अधिकार एवं अस्तित्व को दिखाया गया है। मां और बेटी के प्रेम, पुरुषों की स्त्रियों के विषय में मानसिकता, पारिवारिक रिश्ते आदि अन्य विषय भी इस कहानी संग्रह में मिल जायेंगे। 'यानी की एक बात थी' नामक कहानी संग्रह स्त्रीवाद की नवीन अवधारणा तथा कुटुंब में हो रही विषमता की विसंगतियों को उपस्थित करती है। लेखिका ने कुटुंब में स्त्रियों की स्थिति को नजदीक से देखा है ऐसे विषयों को कहानी के केंद्र में लाने के लिए उनका सराहनीय प्रयास रहा। इनकी कहानियां पारिवारिक एवं मानवीय रिश्तों के बहुआयामी विषयों की जांच करती हैं। रिश्तों में जो आज बदलाव हो रहे हैं, तलाक एवं स्त्री हिंसा की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है तथा भूमंडलीकरण के दौर में स्त्री केवल उपभोग की वस्तु बनकर रह गई है ऐसे विषयों की पड़ताल मृणाल जी ने इस कहानी संग्रह में किया है।

'कोहरा और मछलियां' नामक कहानी मां और बेटी के रिश्तों को लेकर बनी गई हैं। मां का पराए पुरुष के साथ संबंध रहता है और बेटी ऐसे रिश्तों को कैसे मंजूर कर सकती है? 'अंधेरे से अंधेरे तक' कहानी में नायक मनोहर की विषम स्थितियों का अंकन है।

वह जीवन के एकाकीपन एवं निराश, हताश जीवन का सामना करता हुआ कुंठाग्रस्त हो जाता है। वह अपने बहनों एवं पिता के लिए पैसा भेजता रहता है। उनकी हर पसंद एवम् इच्छा को पूरा करने में अपना जीवन बिता देता है। 'अब्दुल्ला' कहानी की लेखिका ने सौतेली माँ द्वारा बालक अब्दुल्ला के प्रति किए गए भेदभाव को दिखाया है। अब्दुल्ला की मां मर जाती है तब उसकी सौतेली मां उसको बहुत परेशान करती है। स्कूल में टीचर के डांटने एवं मारने उसको उतना कष्ट नहीं होता जितना सौतेली मां के बुरे बर्ताव से।

मृणाल जी की कहानियों में नारी जीवन का संघर्ष दिखाई देता है। 'शरण्य की ओर' कहानी में लेखिका ने शिक्षित नारी के विवाह की समस्या को दिखाया है। वहीं 'ढलवान' कहानी में लेखिका ने भारतीय लड़की के जीवन संघर्ष को बारीकी से टटोला है। लड़की अपनी मर्यादा में रहे यही अच्छा माना जाता है, वह पढ़ाई-लिखाई के विषय में भी दूसरे लड़कों से बात न करें, उसका जोर-जोर से हंसना, बोलना तथा रोना भी लोगों को पसंद नहीं होता।

पंचम अध्याय : मृणाल पाण्डे के नाटकों में स्त्री-विमर्श-

पंचम अध्याय के अंतर्गत मैंने मृणाल पांडे के संपूर्ण नाटकों का विस्तृत विश्लेषण किया है। 'मृणाल पांडे के नाटकों में स्त्री-विमर्श' नामक अध्याय स्त्री-विमर्श की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। हिंदी नाटक का प्रारंभ नवजागरण के दौर से भले ही हुआ हो लेकिन मृणाल पांडे ने इसे आगे चलकर आधुनिक और समकालीन बना दिया है। इनके नाटकों में जिस चिंतन की धारणा दिखाई देती है वह बहुत हद तक भरत और अरस्तू से दूर चला गया है। इनके नाटकों में स्त्री के अस्तित्व, मूल्य, परंपरा तथा संस्कृति की चर्चा तो है ही साथ ही साथ वर्षों से अपने अस्तित्व के लिए छटपटाती स्त्री का भाव बोध भी दिखाई देता है। आधुनिक समय में महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, शोषण, हिंसा आदि के फलस्वरूप स्त्री की पलायनवादी मानसिकता का वातावरण जो उपस्थित हुआ वह इनके नाटकों में स्पष्ट दिखाई देता है।

इनके नाटकों में विस्तार और विविधता भी है। पुराने जीवन मूल्यों, कई पीढ़ियों के अंतर टूटते-बनते रिश्ते जनसंख्या, औद्योगिकीकरण, तेजी से बदलता हुआ मानव का स्वरूप, पति-पत्नी के संबंध में आ रही दरार, राजनीति और समाज में स्त्रियों की भागीदारी आदि ऐसे विषय इनके नाटकों में ही मिलते हैं।

'जो राम रचि राखा' नामक नाटक समकालीन जीवन के तनाव एवं सामाजिक जीवन की उलझनों को उजागर करता है। नाटक में मुख्य पात्र मन्ना सेठ साहसी एवं परोपकारी है। अपनी सुख-सुविधा को त्याग कर समाज की सेवा में समर्पित है किंतु यह बात मन्ना सेठ के पिता को अच्छी नहीं लगती वह उसका विरोध करता है। इस नाटक के माध्यम से लेखिका ने पूंजीपतियों द्वारा किए जा रहे गरीबों के शोषण का विरोध करते हुए उनके प्रति सहानुभूति व्यक्त किया है।

'आदमी जो मछुआ नहीं था' एक दुःखान्त नाटक है। इसका प्रमुख पात्र नंददुलारे अपनी पत्नी की इच्छा को पूरी करने के लिए आजीवन संघर्ष करता है। वह बहुत ईमानदार भी है तथा साहस के साथ अपना कार्य करता है। उसकी पत्नी भी सास, ससुर और बच्चों की देखभाल करती है। नंद दुलारे की पत्नी उसे शाही सलाहकार का पद ग्रहण करने को कहती है। किन्तु नंददुलारे ऐसे पद पर काम करना नहीं चाहता। आत्मसम्मान एवं संतोषपरक जीवन जीना चाहता है। ' काजर की कोठरी' नामक नाटक में पात्र हरनंदन का सरला के प्रति सहानुभूतिपूर्ण कार्य का चित्रण है। सरला के चाचा और उसके भाई उसकी संपत्ति लेना चाहते हैं। किन्तु सरला उनको देना नहीं चाहती। सम्पत्ति के लालच में सरला के चचेरे भाई उसका अपहरण तक कर लेते हैं किंतु बादी तवायफ की सूचना देने पर हरनंदन उसकी सहायता करता है और उसके परिवार वालों के चंगुल से बाहर निकाल लेता है। 'चोर निकलकर भागा' नामक नाटक में कला एवं संस्कृति के बाजारीकरण पर तीखा व्यंग्य किया गया है।

समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार और स्वार्थपरता का उल्लेख करते हुए गेंदा लाल जैसे लोगों की चर्चा की गई है।

गेंदा लाल भभूत और चमत्कार के माध्यम से लोगों से धन लूटता है। हर वस्तु को चार गुणा करने का वादा करता है। यहां तक कि ताजमहल की चोरी कैसे करनी है? यह भी आइडिया लोगों को देकर पैसा लूटता है। 'शर्मा जी की मुक्ति कथा' नामक नाटक एक पत्रकार के जीवन एवं कार्यों के विषय का मूल्यांकन करता है। पत्रकार अनंत नारायण शर्मा का हर जगह विरोध होता है। लोग उसके कार्यों से खुश नहीं होते। मृणाल जी ने इस नाटक के माध्यम से पत्रकारिता जगत में हो रहे व्यक्ति के शोषण एवं दमन का जिक्र किया है।

पत्रकारिता में आए दिन मुश्किलों,चापलूसी एवं राजनीतिज्ञों के वर्चस्व को वास्तविकता के साथ उठाया गया है। 'सुपर मैन की वापसी' नामक नाटक में ऐसे व्यक्ति का उदाहरण प्रस्तुत है जो सभी कार्य करने में सक्षम है। किसी के घर की समस्या हो, बेटी की शादी की समस्या हो, किसी का घर खाली करवाना हो, किसी से तलाक करवाना हो, कम समय में कहीं जल्दी जाना हो आदि समस्याओं के निराकरण के लिए पैसे लेता है और अपने आप को सुपरमैन कहता है। आज भी समाज में ऐसे लोग बहुरूपियों के रूप में घूम रहे हैं। समाज में झूठा दिखावा करके लोगों का विश्वास जीतकर उनसे पैसे ऐठते हैं। मृणाल पांडे ने ऐसे लोगों की पहचान कर उन्हें अवसरवादी कहा है। इतना ही नहीं समाज को गुमराह करने वाले ऐसे

स्वार्थलोलुप, टुच्चे एवं विक्षिप्त लोगों के विषय में लेखिका ने करारा व्यंग्य किया है।

'धीरे धीरे रे मना' नाटक में मध्य वर्गीय परिवार में पत्नी की स्थिति और आदमी की दुर्बलता एवं विषमता को दिखाया गया है। नाटक का पात्र सुरेश अपने आपको समाज से अलग कर लेता है। मां-बाप तथा परिवार से कोई मतलब नहीं रखता। स्वार्थी होकर सुखद जीवन जीना चाहता है। वह अपने भाई तथा भाभी से भी दूर रहना चाहता है जबकि रमेश पिता की सेवा करता है और सब को लेकर चलता है। समाज में ऐसे बहुत से स्वार्थी लोग मिल जाते हैं जो हमेशा अपना जीवन जीना चाहते हैं।

कुल मिलाकर इनके नाटक जीवन की विषमता, सामाजिक समस्याओं, स्त्री की दशा, सामाजिक, राजनीति, सांस्कृतिक विषयों का मूल्यांकन करते हैं। लेखिका ने समाज के ऐसे विषयों को अपने साहित्य के साथ जोड़कर दिखाया है जिसमें अन्याय के विरुद्ध संघर्ष और भयानक त्रासदी ही दिखाई देती है।

षष्ठ अध्याय : मृणाल पांडे के निबन्धों एवं अन्य विधाओं में स्त्री-विमर्श

इस अध्याय के अंतर्गत मैंने मृणाल पांडे के निबन्धों एवं अन्य विधाओं का विवरण प्रस्तुत किया है। उनके निबंध स्त्रियों के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक स्थितियों का ग्राफ तैयार करते हैं। महिलाओं पर बढ़ रहे अत्याचार एवं

भारतीय कानून व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए पुलिस प्रशासन की ढिलाई का हवाला दिया है। 'स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक' नामक पुस्तक में स्त्रियों की दशा तथा कामकाजी स्त्री से लेकर नौकरी प्राप्त स्त्रियों की आर्थिक स्थिति का जायजा लिया है। नारी मन की अकुलाहट एवं समाज के क्षेत्रों में स्त्री की भागीदारी कितनी अहम है? ऐसे विषयों की पड़ताल करने के लिए स्त्रियों को साहित्य का विषय बनाकर नारीवाद की नई व्याख्या की है।

उनके प्रत्येक निबंध को पढ़कर उनका विश्लेषण शोधात्मक प्रवृत्ति के आधार पर क्रमशः किया गया है। 'स्त्री लंबा सफर' स्त्रियों के हर क्षेत्र में भागीदारी को प्रस्तुत करता है। स्त्री अपने लंबे सफ़र की कहानी अपनी स्थिति बताते हुए पेश करती है। 'परिधि पर स्त्री' नामक पुस्तक में स्त्री की सामाजिक चहारदीवारी का उल्लेख मिलता है। वर्षों से यह नारी अपने पैरों में रूढ़ियों एवं परंपराओं की जंजीर बांधकर समाज में पिस रही है। वह अपने शोषण एवं दमन को सहन करते हुए जी रही है, किसी से कह नहीं पा रही है यानि कि उसकी सीमा रेखा निर्धारित हो गई है। वह उसी के अंदर जी रही है। बच्चों की समस्या, मजदूरों की समस्या, अस्पतालों की समस्या तथा स्त्रियों की समस्या उनके साहित्य के साथ जुड़ी हुई है। 'ध्वनियों के आलोक में स्त्री' नामक पुस्तक में लेखिका ने स्त्रियों की संगीत एवं कला की भागीदारी को दिखाया है। कला जगत की बारीकियों, स्त्रियों का उसमें योगदान, स्त्री

के आज के कामकाज एवं अस्तित्व को निर्धारित करते हैं। इसके अलावा मृणाल पांडे ने पत्रकारिता जगत में काम किया है।

पत्रकारिता के माध्यम से स्त्री की दयनीय दशा तथा पत्रों में, मीडिया में जन समस्याओं को दर्शाते हुए उनका अवलोकन किया गया है। पत्रकारिता का कोई क्षेत्र उनसे अछूता नहीं है। मृणाल जी की भाषा एवं शैली साहित्य को एक नई दिशा देते हैं जिसके कारण साहित्य और रुचिकर हो गया है।

उपसंहार-

उपसंहार के अंतर्गत मैंने अपने शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय से लेकर षष्ठम अध्याय तक के चिंतन का सार निष्कर्ष के रूप में रखा है और मृणाल पांडे के रचना संसार में सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक स्वरूप निर्धारित करते हुए नारीवाद की नयी चेतना को समझने का प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

(१) आधार ग्रंथ-

उपन्यास-

(१) पाण्डे मृणाल-विरुद्ध, (2013), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

(२) पाण्डे मृणाल- पटरंगपुर पुराण, (2010), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

(३) पाण्डे मृणाल- रास्तों पर भटकते हुए, (2010), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

(४) पाण्डे मृणाल- हमको दियो परदेस, (2011), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

(५) पाण्डे मृणाल- अपनी गवाही, (2010), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

(६) पाण्डे मृणाल- देवी, (2014), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

कहानी संग्रह-

(१) पाण्डे मृणाल-एक स्त्री का विदागीत, (1985), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

(२) पाण्डे मृणाल-बचुली चौकीदारिन की कढ़ी, (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

(३) पाण्डे मृणाल-चार दिन की जवानी तेरी, (1955), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

(४) पाण्डे मृणाल- यानी की एक बात थी, (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

नाटक-

(१) पाण्डे मृणाल- सम्पूर्ण नाटक, (2011), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली -

(क) जो रामरचि राखा

(ख) आदमी जो मछुआरा नही था

(ग) काजर की कोठरी

(घ) चोर निकलकर भागा

(च) शर्मा जी की मुक्तिकथा

रेडियो नाटक-

(१) सुपरमैन की वापसी

(२) धीरे-धीरे रे मना

निबंधात्मक लेख **(**विमर्शपरक रचनाएं**)**

(१) पाण्डे मृणाल- स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, (1987), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

(२) पाण्डे मृणाल-परिधि पर स्त्री, (1946), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

(३) पाण्डे मृणाल-जहाँऔरतें गढ़ी जाती हैं, (2006), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

(४) पाण्डे मृणाल-स्त्री लम्बा सफ़र, (2012), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

(५) पाण्डे मृणाल-ओ उब्बीरी, (2003), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

(६) पाण्डे मृणाल- ध्वनियों के आलोक में स्त्री, (2015), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

अन्य-

(१) पाण्डे मृणाल- बंद गलियों के विरुद्ध, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

(२) पाण्डे मृणाल- बोलता लिहाफ़,(2001), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

(2) सहायक ग्रंथ-

(१) डॉक्टर सिंह बच्चन-आधुनिक हिंदी साहित्यका इतिहास, (1987), लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद

(२) कस्तवार रेखा-स्त्री चिंतन की चुनौतियां, (2006), राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।

(३) माधव नीरजा-हिंदी साहित्य का ओझल नारी इतिहास, (2012), सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली

(४) डॉ. बत्रा सुरेश-नारी अस्मिता हिंदी उपन्यास में

(५) संपादक डॉक्टर चौधरी अंजलि-20 वींसदी के महिला कथासाहित्य में नारी विमर्श

(६) शर्मा क्षमा-स्त्रीवादी विमर्श समाज औ रसाहित्य

(७) त्रिपाठी विश्वनाथ-कुछ कहानियां कुछ विचार, (1998), राज कमल प्रकाशन नई दिल्ली

(८) चौबे देवेंद्र-समकालीन कहानी का समाजशास्त्र, (2001), प्रकाशन संस्थान दिल्ली।

(९) शर्मा जानकी प्रसाद-कहानी का वर्तमान, (1998) राज सूर्य प्रकाशन दिल्ली।

(१०) मधुरेश-हिंदी कहानी अस्मिता की तलाश, (2005), आधार प्रकाशन पंचकुला हरियाणा।

(११) वर्मा धीरेंद्र-हिंदी साहित्य कोश भाग 2, ज्ञान मंडल लिमिटेड वाराणसी।

(१२) सत्यकाम- नई कहानी नए सवाल, अनुपम प्रकाशन पटना।

(१३) शुक्ल राम चंद्र- हिंदी साहित्य का इतिहास, (2002) , प्रकाशन संस्थान दिल्ली।

(१४) शर्मा नासिरा- औरत के लिए औरत, (2003), सामयिक प्रकाशन दिल्ली।

(१५) राज किशोर- स्त्री परंपरा और आधुनिकता, (1999), वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।

(१६) चातक गोविंद- नाटक की साहित्यिक रचना, (1994), तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली।

(१७) मुद्गल चित्रा-आवां, (1999), सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली।

(१८) भारती धर्म वीर-अंधायुग, (1997), किताब महल इलाहाबाद।

(१९) डॉक्टर मोहन नरेंद्र- समकालीन हिंदी कहानी की भाषा, (1989), प्रवीण प्रकाशन दिल्ली।

(२०) डॉक्टर शुक्ल सुरेश चंद्र- आधुनिक हिंदी नाटक, (1981), लिपि प्रकाशन नई दिल्ली।

(२१) संपादक राज किशोर- स्त्री के लिए जगह।

(२२) गुप्ता कुमार कमलेश- भारतीय महिलाएं शोषण, उत्पीड़न एवं अधिकार, (2009), जैनभवन जयपुर।

(२३) बोहरा आशारानी- औरत कल और कल, (2005), कल्याणी शिक्षा परिषद नई दिल्ली।

(२४) वर्मा महादेवी- श्रृंखला की कडियां, (1995), राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।

(२५) डॉक्टर जेइस मानसी- फेमिनिस, (2000), केरल भाषा इंस्टिट्यूट तिरुवनंतपुरम

(२६) नसरीन तस्लीमा-औरत के हक में, (2008), वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।

(२७) सिंहामृ दुला-विकास का विश्वास, (2012), प्रतिभा प्रकाशन नई दिल्ली।

(२८) प्रोफ़ेसर गोपाल राय हिंदी उपन्यास का इतिहास, (2002), राज कमल प्रकाशन इलाहाबाद।

(२९) डॉक्टर तिवारी राम चंद्र- हिंदी उपन्यास, (2006), विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।

(३०) डॉ. देश पांडे वैशाली- स्त्री वाद और महिला उपन्यासकार, (2007), विकास प्रकाशन कानपुर।

(३१) डॉ. शराक राम कली-समकालीन हिंदी कथा लेखिकाएं, द्वितीय संस्करण, उत्तर प्रकाशन नई दिल्ली।

(३२) गर्ग मृदुला-टुकड़ा टुकड़ा आदमी, प्रथम संस्करण, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली।

(३३) गर्ग मृदुला-शहर के नाम, प्रथम संस्करण, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली।

(३४खंडेलवाल दीप्ति-औरत और बातें, प्रथम संस्करण, प्रतिभा प्रकाशन, आगरा।

(३५) डॉक्टर दिवेदी दिनेश- प्रथम संस्करण

(३६) रानी आशु-महिला विकास कार्यक्रम, (2008), इना श्री पब्लिकेशन जयपुर।

(३७) राजे सुमन-हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, (1987), भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली।

(३८) शर्मा क्षमा-स्त्री का समय, (2001), मेधाबुक्स दिल्ली।

(३९) शर्मालता-औरत अपने लिए, (2006), सामयिक प्रकाशन दिल्ली।

(४०) यादव राजेंद्र-सारा आकाश, (1976), अक्षर प्रकाशन दिल्ली।

(४१) हाड़े गुलाब राय-मन्नू भंडारी का कथा साहित्य, (1987), विद्या प्रिंटर्स गांधी नगर कानपुर।

(४२) यादव राजेंद्र- बेजुबानी जुबान हो जाए, (2006), राज कमल प्रकाशन दिल्ली।

(४३) सोबती कृष्णा-हम हस मत 2, (1999), राज कमल प्रकाशन।

(४४) सोबती कृष्णा-शब्दों के आलोक में, (2005), राज कमल प्रकाशन।

(४५) सिंह सुधा-ज्ञान कास्त्री वादी पाठ, (2008), सरस्वती काम्प्लेक्स, सुभाष चौक दिल्ली।

(३) पत्र एवं पत्रिकाएं-

१) सम्मेलन पत्रिका-हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयागराज।

(२) कादंबिनी- दिल्ली

(३) आज कल- दिल्ली

(४) संचेतना- दिल्ली

(५) नया ज्ञानोदय- दिल्ली

(६) नंदन- दिल्ली

(७) दैनिक हिंदुस्तान- लखनऊ

(८) अमर उजाला- इलाहाबाद

(९) श्रोत्रिय प्रभाकर- नया ज्ञानोदय, (2005), भारतीय ज्ञान पीठ

(१०) सहयोगी हरि नारायण- कथादेश, (2010), सहयात्रा प्रकाशन दिल्ली।

(११) वेदव्यास- मधुमति, (2012), राजस्थान साहित्य अकादमी।

(१२) यादव राजेंद्र-हंस, (2004), अक्षर प्रकाशन दिल्ली।

(१३) संपादक वैरागी मोहन-अक्षरवार्ता (पत्रिका), (2020 अक्टूबर अंक), क्षीर सागर उज्जैन।

(१४) डॉक्टर कुमार राकेश-भाषा (पत्रिका), (जनवरी अंक 2020), केंद्रीय हिंदी निदेशालय दिल्ली।

(१५) डॉ. मानस सुनील कुमार-आलोचन दृष्टि (पत्रिका), (जनवरी- मार्चअंक 2020), आजाद नगर बिंदकी कानपुर।

भवदीय

दिलीप कुमार

तिथि -